भारत का निर्यात आउटलुक

प्रलिम्सि के लिये: भारत का निर्यात आउटलुक,

[सकल घरेलू उत्पाद](), [विश्व व्यापार संगठन](), [विदेश व्यापार नीति](), **निर्यात योजना के लिये व्यापार अवसंरचना (TIES)**

मेन्स के लिये:

भारत का निर्यात आउटलुक, चुनौतियाँ और आगे की राह

चर्चा में क्यों?

भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिये वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं को देखते हुए निर्यात लक्ष्यों की घोषणा के साथ **टारगेट रेंज अप्रोच** अपनाने का निर्णय लिया है।

- वर्ष 2022-23 के दौरान वस्तु निर्यात में रिकॉर्ड 450 बिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य हासिल करने के बावजूद भारत के **आउटबाउंड शिपमेंट को वर्ष 2023-2024 की पहली तिमाही** में कई प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

टारगेट रेंज अप्रोच:

- **चार प्रमुख मापदंडों पर आधारित लक्ष्य:**
  - **वर्ष 2030 तक 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का समग्र लक्ष्य:**
    - भारत की नई विदेश व्यापार नीति, 2023 के अनुसार, **भारत का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** का कुल निर्यात लक्ष्य हासिल करना है, जिसमें **सेवाओं और वस्तुओं के निर्यात का योगदान एक ट्रिलियन डॉलर** का होगा।
    - चालू वर्ष के लक्ष्य निर्धारित करते समय इस दीर्घकालिक उद्देश्य पर विचार किया जाएगा।
  - **आयातक देशों का आयात-सकल घरेलू उत्पाद अनुपात:**
    - लक्ष्य निर्धारण में उन देशों के **सकल घरेलू उत्पाद अनुपात में आयात** को ध्यान में रखा जाएगा जो भारतीय वस्तुओं के आयातक हैं।
    - यह अनुपात विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में भारतीय उत्पादों की संभावित मांग के संबंध में जानकारी प्रदान करेगा।
  - **भारत का सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात अनुपात:**
    - देश की निर्यात क्षमता का आकलन करने के लिये भारत के **निर्यात से GDP अनुपात** का आकलन किया जाएगा।
  - **पिछले वर्षों की वृद्धि प्रवृत्ति:**
    - भारत के **व्यापार प्रदर्शन को समझने और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारण पर विचार करने के लिये निर्यात में पिछले विकास रुझानों का विश्लेषण** किया जाएगा।
- **लक्ष्य सीमा:**
  - वित्त वर्ष 2022-23 में निर्यात **450 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का था। इस आँकड़े के आधार पर और **10% की रूढ़िवादी विकास दर (Conservative Growth Rate)** मानते हुए व्यापार विशेषज्ञ निम्नलिखित संभावित लक्ष्य सीमा का सुझाव देते हैं:
    - **रेंज का निचला स्तर:** 451 बिलियन अमेरिकी डॉलर (पिछले वर्ष के निर्यात से थोड़ा ऊपर)।
    - **रेंज का ऊपरी स्तर:** 495 बिलियन अमेरिकी डॉलर (10% की वृद्धि दर मानकर)।
- **निगरानी तंत्र:**
  - वाणिज्य विभाग हर महीने निर्यात प्रदर्शन को ट्रैक करने के लिये एक निश्चित संख्या का उपयोग करेगा, जो **मध्य-मूल्य या औसत** हो सकता है।
  - यह निगरानी तंत्र **प्रगति की समय पर जानकारी प्रदान करेगा और यदि ज़रूरी हो तो आवश्यक समायोजन करने में मदद करेगा।**

भारतीय निर्यात का वर्तमान परिदृश्य:

- **निर्यात प्रदर्शन:**
  - हाल के **महीनों** में माल निर्यात में मंदी की **एक शृंखला देखी** गई है, जून 2023 में 22% की गिरावट के साथ, **37 महीनों में सबसे बड़ी**

गरिावट देखी गई।
    - जून 2023 में 32.7 बलियिन अमेरकिी डॉलर का नरि्यात **अक्तूबर 2022** के बाद सबसे कम था।
- नरि्यात सेवाओं में भी मंदी देखी गई है, **अमूर्त नरि्यात से वदिेशी मुद्रा आय** 2023-24 की पहली तमिाही **में केवल 5.2% बढ़कर 80 बलियिन अमेरकिी डॉलर हो गई,** जबकि पिछिले वर्ष 2022-23 में लगभग 28% की वृद्धि हुई थी, जहाँ आय 325 बलियिन अमेरकिी डॉलर तक पहुँच गई थी।

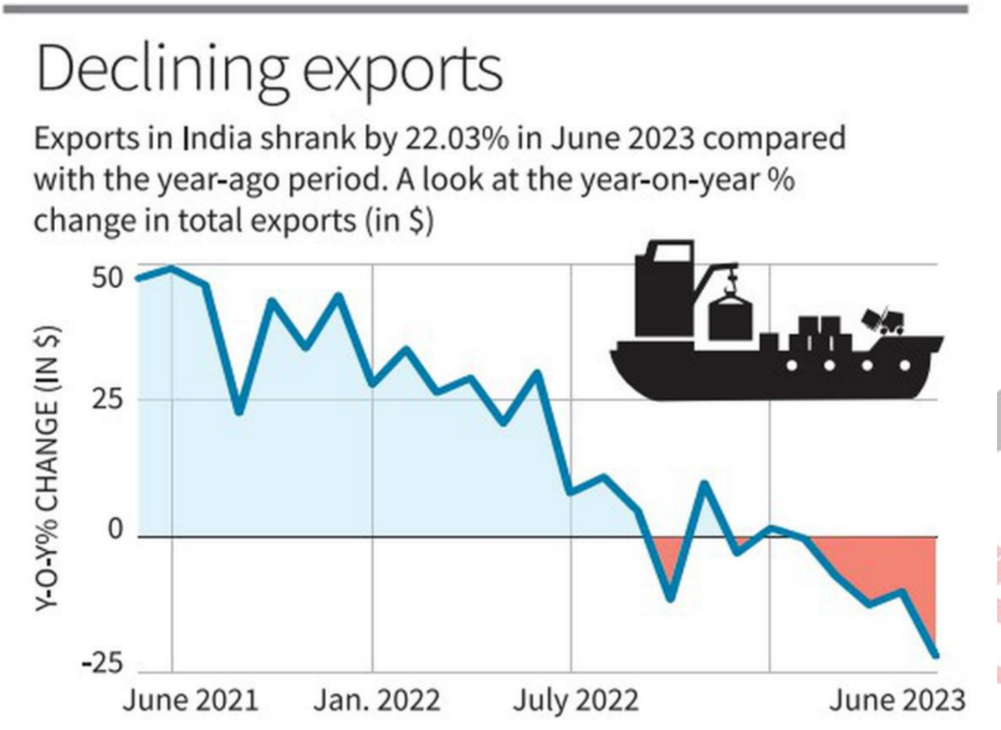

//

- **नरि्यात को प्रभावति करने वाले कारक:**
    - **वैश्वकि तेल कीमतें:**
        - **पहली तमिाही में** पेट्रोलयिम नरि्यात **में 33.2% की भारी गरिावट देखी गई,** जो मुख्य रूप से वैश्वकि तेल की कीमतों में कमी के कारण हुई।
        - इसके अतरिक्ति **रूसी तेल शपिमेंट पर मूल्य सीमा प्रतबिंधों ने भी मांग में कमी लाने में योगदान दयिा है।**
    - **बाह्य कारक:**
        - [वशि्व व्यापार संगठन (WTO)]() का 2023 में धीमी वैश्वकि व्यापार वृद्धि का पूर्वानुमान भारत के नरि्यात दृष्टकिोण को प्रभावति कर रहा है, जसिसे अधकि सतर्क दृष्टकिोण की आवश्यकता हो रही है।
- **सरकार का व्यापक लक्ष्य:**
    - नई [वदिेश व्यापार नीति]() के अनुसार, नरि्यात के लयि भारत का व्यापक उद्देश्य वर्ष 2030 तक 2 ट्रलियिन अमेरकिी डॉलर का लक्ष्य हासलि करना है, जसिमें सेवाओं और वस्तुओं के नरि्यात में प्रत्येक का योगदान एक ट्रलियिन डॉलर होगा।

भारत में नरि्यात क्षेत्र की स्थतिि:

- **व्यापार की स्थतिि:**
    - व्यापार घाटा, जो नरि्यात और आयात के बीच का अंतर है, वर्ष **2022-23 में 39% से अधकि** बढ़कर रकिॉर्ड 266.78 बलियिन अमेरकिी डॉलर हो गया, जबकि वर्ष 2021-22 में यह 191 बलियिन अमेरकिी डॉलर था।
    - **वर्ष 2022-23 में व्यापारकि आयात में 16.51%** की वृद्धि हुई, जबकि व्यापारकि नरि्यात में 6.03% की वृद्धि हुई।
        - हालाँकि कुल व्यापार घाटा वर्ष 2022-23 में 122 बलियिन अमेरकिी डॉलर रहा, जबकि वर्ष 2022 में यह 83.53 बलियिन अमेरकिी डॉलर था, जसि सेवाओं में व्यापार अधशिेष से समर्थन मलिा।

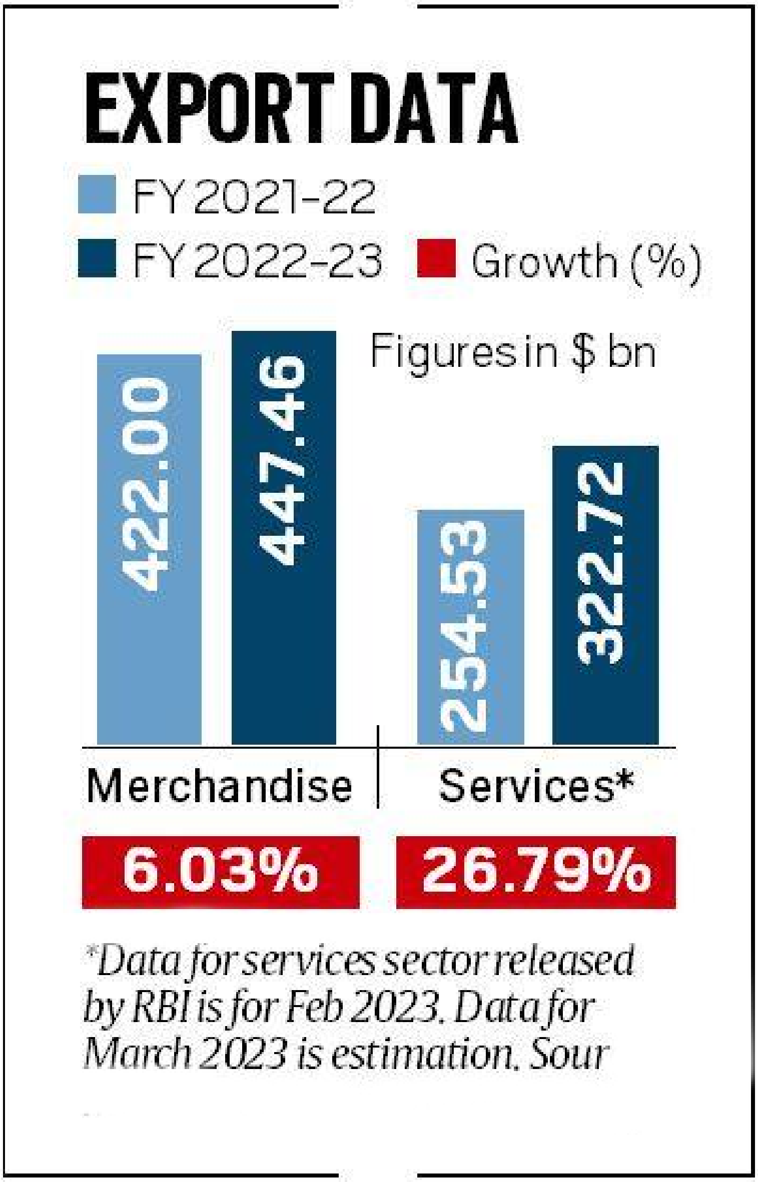

- **भारत के प्रमुख निर्यात क्षेत्र:**
  - **इंजीनियरिंग वस्तुएँ:** इसमें वित्त वर्ष 2012 में 101 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात के साथ 50% की वृद्धि दर्ज की गई।
  - **कृषि उत्पाद**: महामारी के बीच भोजन की वैश्विक मांग को पूरा करने के लिये सरकार के दबाव में कृषि निर्यात में वृद्धि हुई । भारत 9.65 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य का **चावल निर्यात करता है**, जो कृषि वस्तुओं में सबसे अधिक है।
  - **कपड़ा और परिधान**: भारत का कपड़ा और परिधान निर्यात (हस्तशिल्प सहित) वित्त वर्ष 2012 में 44.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का रहा, जो प्रत्येक वर्ष के आधार पर 41% की वृद्धि है।
    - सरकार की मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीज़न एंड अपैरल (MITRA) पार्क जैसी योजनाएँ इस क्षेत्र को बढ़ावा दे रही हैं।
  - **फार्मास्यूटिकल्स और ड्रग्स**: भारत मात्रा के हिसाब से दवाओं का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्त्ता है।
    - भारत अफ्रीका की जेनरिक दवा मांग का 50% से अधिक, अमेरिका में जेनेरिक मांग का लगभग 40% और UK में सभी दवाओं की 25% हिस्से की आपूर्ति करता है।

भारत में निर्यात क्षेत्र से संबंधित चुनौतियाँ:

- **वित्त की उपलब्धता में चुनौतियाँ:**
  - निर्यातकों के लिये किफायती और समय पर वित्त उपलब्ध करना महत्त्वपूर्ण है।
  - हालाँकि अनेक भारतीय निर्यातकों को **उच्च ब्याज दरों, संपार्श्विक आवश्यकताओं और वित्तीय संस्थानों से ऋण उपलब्धता की कमी के कारण वित्त प्राप्त करने में चुनौतियों** का सामना करना पड़ता है विशेष रूप से लघु और मध्यम उद्योगों (SME) के लिये।
- **सीमित विविधीकरण:**
  - भारत का निर्यात इंजीनियरिंग सामान, कपड़ा और फार्मास्यूटिकल्स जैसे **कुछ क्षेत्रों पर केंद्रित** है जो इसे वैश्विक मांग में उतार-चढ़ाव तथा बाज़ार जोखिमों के प्रति संवेदनशील बनाता है।
  - निर्यात का सीमित विविधीकरण **भारत के निर्यात क्षेत्र के लिये एक चुनौती** है क्योंकि बदलती वैश्विक व्यापार गतिशीलता इसकी

व्यापकता को सीमित कर सकती है।

- **संरक्षणवाद और विवैश्वीकरण में वृद्धि:**
    - बाधित वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था (**रूस-यूक्रेन युद्ध**) और **आपूर्ति शृंखला के शस्त्रीकरण** के कारण विश्व भर के देश संरक्षणवादी व्यापार नीतियों की ओर बढ़ रहे हैं जिससे भारत की निर्यात क्षमताएँ कम हो रही हैं।

निर्यात वृद्धि हेतु प्रमुख सरकारी पहल:

- **निर्यात हेतु व्यापार अवसंरचना योजना (TIES)**
- **पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (NMP)**
- **ड्यूटी ड्रॉ-बैक योजना**
- **निर्यात उत्पादों पर शुल्क और कर छूट योजना (RoDTEP)**
- **राज्य और केंद्रीय कर एवं लेवी में छूट**

आगे की राह

- निर्यात प्रतिस्पर्द्धात्मकता बढ़ाने के लिये बेहतर **बुनियादी ढाँचा और लॉजिस्टिक्स महत्त्वपूर्ण** हैं।
- भारत को **परिवहन नेटवर्क, बंदरगाहों,** सीमा शुल्क निकासी प्रक्रियाओं और निर्यात-उन्मुख बुनियादी ढाँचे जैसे निर्यात प्रोत्साहन क्षेत्रों तथा विशेष विनिर्माण क्षेत्रों में निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिये।
- निर्यातोन्मुख उद्योगों में कुशल श्रमिकों की उपलब्धता बढ़ाने हेतु **कौशल विकास कार्यक्रम** लागू किये जाने चाहिये।
- इसके अतिरिक्त **स्वचालन, डिजिटलीकरण और उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों** जैसी प्रौद्योगिकी अपनाने को प्रोत्साहित करना चाहिये। साथ ही यह निर्यात क्षेत्र में उत्पादकता, प्रतिस्पर्द्धात्मकता और नवाचार को भी बढ़ावा दे सकता है।

स्रोत: द हिंदू

स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी

प्रिलिम्स के लिये:

स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी, स्टील स्लैग, वेस्ट टू वेल्थ मिशन

मेन्स के लिये:

स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी, वेस्ट टू वेल्थ मिशन में इसका महत्त्व, सड़क बुनियादी ढाँचे में तकनीकी प्रगति

चर्चा में क्यों?

केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (CRRI), नई दिल्ली द्वारा इस्पात मंत्रालय और प्रमुख इस्पात विनिर्माण कंपनियों के सहयोग से विकसित नवीन स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी वेस्ट टू वेल्थ मिशन की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रही है।

- यह तकनीक सड़क निर्माण में क्रांति के साथ स्टील स्लैग कचरे की पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर रही है।

स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी:

- **परिचय:**
    - स्टील स्लैग रोड तकनीक अधिक मज़बूत और अधिक टिकाऊ सड़कों के निर्माण के लिये **स्टील स्लैग, स्टील उत्पादन के दौरान उत्पन्न अपशिष्ट का उपयोग करने की एक नवीन विधि है।**
    - प्रौद्योगिकी में **अशुद्धियों और धातु सामग्री को हटाने के लिये स्टील स्लैग को संसाधित करना और फिर इसे सड़क आधार या उप-आधार परतों के लिये एक समुच्चय के रूप में उपयोग करना शामिल** है।
    - प्रसंस्कृत स्टील स्लैग में **उच्च शक्ति, कठोरता, घर्षण प्रतिरोध, स्किड प्रतिरोध और जल निकासी क्षमता होती है** , जो इसे

सड़क निर्माण के लिये उपयुक्त बनाती है।
- यह इस्पात संयंत्रों द्वारा **उत्पन्न अपशिष्ट स्टील स्लैग के बड़े पैमाने पर उपयोग की सुविधा** प्रदान करता है, जिससे भारत में उत्पादित लगभग **19 मिलियन टन स्टील स्लैग का प्रभावी ढंग से प्रबंधन होता है।**

- **लाभ:**
  - **पर्यावरण-अनुकूल अपशिष्ट उपयोग:**
    - सड़क निर्माण में अपशिष्ट स्टील स्लैग का उपयोग करके प्रौद्योगिकी औद्योगिक अपशिष्ट के प्रबंधन के **लिये एक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण प्रदान करती है।**
      - इससे **लैंडफिल** पर बोझ कम हो जाता है और स्टील स्लैग निपटान से जुड़े **पर्यावरणीय प्रभाव कम** हो जाते हैं।
  - **लागत प्रभावी और टिकाऊ:**
    - स्टील स्लैग सड़कें **लागत प्रभावी** साबित हुई हैं, क्योंकि **पारंपरिक फर्श विधियों की तुलना में उनका निर्माण लगभग 30% सस्ता है।**
      - इसके अतिरिक्त ये सड़कें **असाधारण स्थायित्व को प्रदर्शित** करती हैं तथा **मौसम परिवर्तन का विरोध** करती हैं जिसके परिणामस्वरूप रखरखाव लागत काफी कम हो जाती है।
  - **प्राकृतिक संसाधनों पर कम निर्भरता:**
    - पारंपरिक सड़क निर्माण काफी हद तक **प्राकृतिक गिट्टी पर निर्भर** करता है जिससे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो जाते हैं।
    - स्टील स्लैग सड़क तकनीक प्राकृतिक सामग्रियों की आवश्यकता को समाप्त करती है। यह तकनीक **मूल्यवान संसाधनों के संरक्षण और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने में सहायता** करती है।
  - **स्टील स्लैग अपशिष्ट चुनौती को संबोधित करना:**
    - **भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक देश है** जो ठोस अपशिष्ट के रूप में लगभग **19 मिलियन टन स्टील स्लैग उत्पन्न** करता है। यह आँकड़ा **वर्ष 2030** तक आश्चर्यजनक रूप से **60 मिलियन टन** तक बढ़ने का अनुमान है। प्रति टन स्टील उत्पादन के परिणामस्वरूप **लगभग 200 किलोग्राम स्टील स्लैग अपशिष्ट उत्पन्न** होता है।
      - कुशल निपटान विधियों की कमी के कारण इस्पात संयंत्रों के आसपास स्लैग के विशाल ढेर जमा हो गए हैं जो **जल, वायु और भूमि प्रदूषण** में योगदान दे रहे हैं।
- **सफल कार्यान्वयन:**
  - **प्रौद्योगिकी में सूरत का चमत्कार:**
    - गुजरात के सूरत में स्टील स्लैग रोड तकनीक का उपयोग करके बनाई गई पहली सड़क ने अपनी प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता के लिये मान्यता प्राप्त की है।
  - **सीमा सड़क संगठन का योगदान:**
    - प्रौद्योगिकी की सफलता **भारत-चीन सीमा** तक है, जहाँ सीमा सड़क संगठन **(Border Roads Organisation-BRO)** ने CRRI और टाटा स्टील के साथ मिलकर **अरुणाचल प्रदेश में एक स्टील स्लैग रोड** का निर्माण किया।
    - इस परियोजना ने **चुनौतीपूर्ण इलाकों और महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय बुनियादी ढाँचे के लिये प्रौद्योगिकी की उपयुक्तता का प्रदर्शन किया।**
- **राष्ट्रव्यापी स्वीकृति को बढ़ावा देना:**
  - स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी की सफलता ने विभिन्न सरकारी एजेंसियों और मंत्रालयों का ध्यान आकर्षित किया है।
    - **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के सहयोग से** इस्पात मंत्रालय देश भर में इस तकनीक के व्यापक उपयोग को बढ़ावा देने के लिये सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।
    - सहयोगात्मक प्रयासों को बढ़ावा देकर भारत का लक्ष्य स्थायी सड़क अवसंरचना के विकास का नेतृत्व करना और अपने **'वेस्ट टू वेल्थ'** मिशन को पूरा करना है।

वेस्ट टू वेल्थ मशिन:

- यह मशिन अपशष्टि से ऊर्जा उत्पन्न करने, बेकार सामग्री के पुनर्चक्रण आदि के लिये प्रौद्योगकियों की पहचान करने के साथ ही उनके वकिास और उपलब्धता सुनश्चिति करेगा।
- "द वेस्ट टू वेल्थ" मशिन प्रधानमंत्री की वज्ञिान, प्रौद्योगकिी और नवाचार सलाहकार परषिद (PM-STIAC) के नौ राष्ट्रीय मशिनों में से एक है।
- यह मशिन स्वच्छ भारत और स्मार्ट शहर जैसी परयिोजनाओं में मदद करेगा, साथ ही एक ऐसा वृहद् आर्थकि मॉडल तैयार करेगा जो देश में अपशष्टि प्रबंधन को कारगर बनाने के साथ-साथ उसे आर्थकि रूप से व्यवहार्य भी बनाएगा।

स्रोत: पी.आई.बी.

टमाटर की कीमत में अस्थरिता

प्रलिमि्स के लयि:

टमाटर मोज़ेक वायरस (ToMV) और ककड़ी मोज़ेक वायरस (CMV), **मुद्रास्फीतदिर**

मेन्स के लयि:

खाद्य मुद्रास्फीतिऔर मुद्दे, चरम मौसम की स्थतिका प्रभाव, कीटों का हमला, टमाटर की पैदावार पर वायरस (ToMV और CMV) का प्रभाव, कीमतों के प्रबंधन और बाज़ार को स्थरि करने में सरकार की भूमकिा

चर्चा में क्यों?

भारतीय परवािरों की मुख्य सब्जी **टमाटर** अपनी **कीमतों में आश्चर्यजनक वृद्धि के कारण** चतिा का कारण बन गया है।

- जून 2022 में टमाटर की **कीमतें 20 से 40 रुपए प्रतकिलिोग्राम** तक अचानक बढ़ गई थी तथा जुलाई 2023 में **100 रुपए प्रतकिलिोग्राम** तक पहुँच गई जसिसे कीमत में उतार-चढ़ाव के पीछे के कारणों पर अनेक प्रश्न उत्पन्न हो गए हैं।
- कीमतों में वृद्धि के बावजूद टमाटर की मुद्रास्फीतदिर **आश्चर्यजनक रूप से नकारात्मक** है जसिे कारण एक हैरान करने वाली आर्थकि घटना बन गई है जसिे **#Tomato-nomics** के नाम से जाना जाता है।

टमाटर की कीमत में वृद्धि:

- **भारत में टमाटर का उत्पादन:**
  - टमाटर का उत्पादन क्षेत्रीय रूप से **आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, ओडशिा और गुजरात** जैसे राज्यों में केंद्रति है जो **कुल उत्पादन का लगभग 50%** है।
  - भारत में प्रत्येक वर्ष टमाटर की दो मुख्य फसलें होती हैं- **खरीफ और रबी**।
    - **खरीफ की फसल सतिंबर से उपलब्ध होती है,** जबकि रबी की फसल **मार्च और अगस्त के बीच बाज़ार में आती है।**
      - **जुलाई-अगस्त टमाटर के लयि कम उत्पादन अवधि है** क्योंकि इसकी पैदावार इसी बीच होती है।
  - सबसे अधकि खेती की जाने वाली सब्जियों में से एक होने के बावजूद टमाटर का उत्पादन**वर्ष 2019-20 में अपने चरम यानी 21.187 मलियिन टन (MT) के बाद से कम हो रहा है।**
- **टमाटर की अधकि कीमत के पीछे कारण:**
  - **वषिम मौसम:**
    - अप्रैल व मई में हीट वेव **और** मानसून में देरी के कारण टमाटर की फसल पर कीटों का हमला होता है, जसिसे गुणवत्ता तथा व्यावसायकि बक्रिी प्रभावति होती है।
      - परणािमस्वरूप जून तक के महीनों में कसिानों को उनकी उपज के लयि कम कीमतें मलिती हैं।
  - **CMV और ToMV वायरस:**
    - टमाटर की फसल में हालयिा गरिावट और महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं अन्य दक्षणि भारतीय राज्यों में टमाटर की कीमतों में वृद्धि को पौधों के दो वायरस के संक्रमण के लयि ज़म्मिेदार ठहराया जा सकता है:टमाटर मोज़ेक वायरस (ToMV) और ककड़ी मोज़ेक

वायरस (CMV)।
  - इन वायरस के कारण **पिछले तीन वर्षों में टमाटर के बागानों में आंशिक से लेकर पूरी फसल का नुकसान हुआ है।**
  - चूँकि दोनों वायरस में व्यापक मेज़बान सीमा होती है और अगर समय पर समाधान नहीं किया गया तो **लगभग 100% फसल का नुकसान हो सकता है**, उन्होंने टमाटर की पैदावार को काफी प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप टमाटर की कीमतों में वृद्धि हुई है।
- **कम वाणिज्य प्राप्ति:**
  - मूल्य वृद्धि से पहले के महीनों में किसानों को अपनी टमाटर की फसलों से कम आय होना उनके लिये एक प्रकार की चुनौती रही।
  - दिसंबर 2022 और अप्रैल 2023 के बीच कई किसानों को उनकी उपज के लिये 6 रुपए से 11 रुपए प्रति किलोग्राम तक की कम कीमत मिली।
  - इससे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई जहाँ किसानों को अपनी फसलें अलाभकारी दरों पर बेचनी पड़ी या यहाँ तक कि अपनी उपज को छोड़ना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप आपूर्ति में कमी आई।
- **किसानों द्वारा टमाटर का कम उत्पादन:**
  - पिछले वर्ष किसानों को टमाटर उत्पादन पर प्राप्त हुई कम कीमतों का खेती के पैटर्न पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।
  - इस कारण टमाटर की आपूर्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कई किसानों ने अपना ध्यान अन्य फसलों की खेती पर केंद्रित कर दिया, इन अन्य फसलों से उन्हें बाज़ार में ऊँची कीमतें मिलीं, जिससे किसान वैकल्पिक फसलों को चुनने के लिये प्रेरित हुए।
  - खेती में इस बदलाव के परिणामस्वरूप टमाटर का उत्पादन कम हो गया, जिससे आपूर्ति संकट और बढ़ गया तथा कीमतों में वृद्धि हुई।
- **आपूर्ति की कमी:**
  - निम्न गुणवत्ता वाले टमाटरों के कारण कई किसानों को उन्हें कम कीमतों पर बेचने अथवा अपनी फसल छोड़ने के लिये मजबूर होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप टमाटर की आपूर्ति में कमी आई।
  - लगातार बारिश की वजह से नई फसलों और गैर-उत्पादन वाले क्षेत्रों में इसके परिवहन पर प्रभाव पड़ा।
- **उत्पादन में क्षेत्रीय गिरावट:**
- **तमिलनाडु, गुजरात और छत्तीसगढ़ में टमाटर के उत्पादन में 20% की गिरावट** देखी गई, इससे टमाटर की कमी की समस्या उत्पन्न हुई।

- **टमाटर की ऊँची कीमतों का प्रभाव:**
  - **मुद्रास्फीति का दबाव:** टमाटर की कीमतों की अस्थिरता ने ऐतिहासिक रूप से देश में समग्र मुद्रास्फीति के स्तर में योगदान दिया है, जिससे उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति प्रभावित हुई है।
  - **CPI का प्रभाव:** टमाटर की कीमत में उतार-चढ़ाव से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) पर अधिक प्रभाव पड़ता है, जिससे नीति निर्माताओं के लिये मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना एक चुनौती बन जाता है।
  - **आर्थिक संकट:** ऊँची कीमतें परिवारों के बजट पर दबाव डालती हैं, खासकर कम आय वाले परिवारों के लिये जो आहार के रूप में टमाटर पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
- **टमाटर की कीमतें कम करने के संभावित उपाय:**
  - **मूल्य एवं आपूर्ति शृंखला में सुधार करना:** खराब होने और परिवहन संबंधी समस्याओं के समाधान के लिये मूल्य एवं आपूर्ति शृंखला में सुधार करना।
  - **प्रसंस्करण क्षमता बढ़ाना:** मौसम की अवधि के दौरान पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये टमाटरों को पेस्ट और प्यूरी में परिवर्तित करना।
  - **प्रत्यक्ष बिक्री को प्रोत्साहित करना:** किसानों को उपभोक्ता कीमतों का बड़ा हिस्सा प्रदान करने के लिये किसान उत्पादक संगठनों द्वारा प्रत्यक्ष बिक्री को बढ़ावा देना।
  - पॉली हाउस **तथा ग्रीनहाउस में खेती को बढ़ावा देना:** कीटों के हमलों को नियंत्रित करने के साथ पैदावार बढ़ाने के लिये नियंत्रित वातावरण में खेती को प्रोत्साहित करना।

टमाटर की नकारात्मक मुद्रास्फीति दर:

- **उच्च आधार प्रभाव:**
  - **नकारात्मक मुद्रास्फीति दर उच्च आधार प्रभाव** का परिणाम है। उस समय बढ़ती कीमतों के कारण **जून 2022 में टमाटर का सूचकांक मूल्य** काफी अधिक था।
  - जून 2023 में कीमतों में बढ़ोतरी के बाद भी **सूचकांक मूल्य पिछले वर्ष की तुलना में बहुत कम था, जिससे नकारात्मक मुद्रास्फीति हुई।**
- **गणना विधि:**
  - भारत में मुद्रास्फीति दर की **गणना प्रत्येक वर्ष के आधार पर की जाती है**, जिसमें किसी विशिष्ट माह के सूचकांक मूल्य की तुलना पिछले वर्ष के उसी माह से की जाती है।
  - **जून 2023 (191) का सूचकांक मूल्य जून 2022 (293) के सूचकांक मूल्य से काफी कम है, जो 35% की कमी दर्शाता** है।
    - टमाटर की कीमतों में हालिया वृद्धि के बावजूद जून 2022 से जून 2023 तक सूचकांक मूल्य में गिरावट के कारण नकारात्मक मुद्रास्फीति हुई।
- **अस्थायी मूल्य वृद्धि:**
  - कुछ ही समय में टमाटर की कीमतों में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई और जून 2023 में टमाटर की कीमतें 100 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुँच गईं।
  - हालाँकि यह वृद्धि स्थिर नहीं रही और बाद में **कीमतों में गिरावट शुरू हो गई, जिसने नकारात्मक मुद्रास्फीति दर में योगदान दिया।**

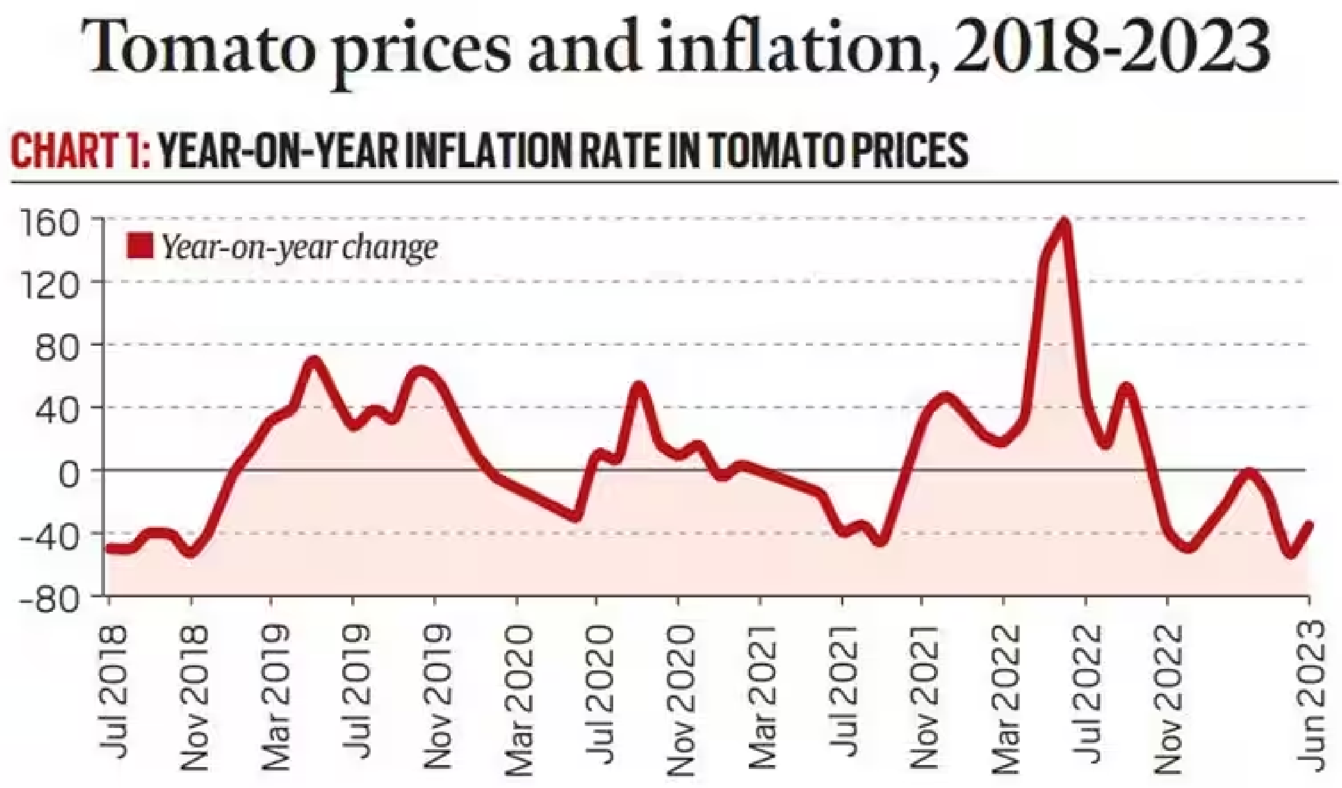

स्रोत : द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/news-analysis/22-07-2023/print